Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कुंतक तथा भोजकृत वक्रोक्तिजीवितम्

डॉ. पी.एस. बघेल *

* प्राध्यापक (संस्कृत) पीएम एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – डॉ. वेलवेकर की कृपा से सन् 1923 में कुन्तक की प्रति वक्रोक्ति जीवित प्रकाशित हो पाई। उसके बाद सन् 1928 में उनका एक स्वच्छ प्रति प्राप्त हुई।

प्रस्तुत ग्रन्थ में वक्रोक्ति जीवित के कारिका, वृत्ति और उदाहरण तीनों भाग उदाहरण सहित उपलब्ध हुए। इस ग्रन्थ की कारिका, वृत्ति, उदाहरण आदि सभी कुन्तक से ही प्राप्त हुए। जिसे वक्रोक्ति जीवित कहा गया।

कुंतक के अनुसार केवल कारिका भभाग को ही काव्यालंकार कहा जाना शोधकर्ताओं की ओर से कहा गया।

उक्त वृत्ति में इस प्रकार व्यक्त किया गया है कि–

'लोकोत्तर चमत्कारकारि वैचित्र्य सिद्धये।'
काव्स्यायमलंकार : कोऽपूर्व विधीते।।

आगे यह भी वृत्ति में कहा है कि–

'नन् सन्ति चिरंतंनास्तदलंकारास्तत्
किमर्थ मित्याह–अपूर्व: तद्
व्यतिरिक्तार्थीभिधायी
कोपि अलौकिक: सातिशय:।
लोको... सिद्धये–असामान्योहलाद।।
विधायिविचित्रभाव सम्पत्ते।
यद्यपि सन्ति शतश: काव्यालंकारास्तथापि
न कुतश्चिद प्येवंविध वैचित्र्य सिद्धि:।।'

उक्त कथन मेंभभामह, उद्भट और रुद्रट की रचनाओं को काव्यालंकार कहा जाता था। किन्तु प्राय: सभी आलोचकों ने उसे वक्रोक्ति–जीवित ही माना है।

इसी ग्रन्थ में यह भी कहा गया है कि वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा मानते हैं। कुंतक द्वारा ही वक्रोक्तिजीवित लक्षण दर्शायें हैं।

कतिपय लेखक वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा मानते हैं। महिमभट्ट के अनुसार वक्रोक्ति क्तिजीवितगत लक्षण कुन्तक द्वारा ही रचित है। टीकाकार व्याख्या रूप वृत्ति और श्लोकभभी वक्रोक्ति जीवित के ही भाग है। प्रथम उन्मेश में देवी सूक्तानुसार निम्न श्लोक कहा गया है:–

'वाचो विषनैयत्यमुत्पादयितुमुच्चते।
आदि वाक्येभिध्यादि निर्मिते र्मान सूत्रवत्।
लोकोत्तर चमत्कार का वैचित्र्य सिद्धये।
काव्यस्यामलकार: कोऽप्पूर्वविधीयते।
धर्मादिसाधनोपाय: सुकुमार क्रमोदित:।
काव्यबंधोभिजातानां हृदयाह्लादकारक:।।'

भामह के समान ही काव्य का प्रयोग 'धर्मार्थ...काव्य निबन्धनम्।' इसके अनुसार इसे काव्यालंकार ही कहा गया है।

भामह के अनुसार 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'

कुन्तक ने भी इन्हीं शब्दों से काव्य की परिभाषा की है यथा–

'शब्दार्थौ सहितौ वक्र' कवि व्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लदकारिणी।।'

अर्थात् कवि की कल्पना–कुशलता से शब्दार्थ के संयोंग से जो चमत्कृतिपूर्ण रचना होती है, उसी का नाम काव्य है। सालंकृत शब्द और अर्थ मिलकर काव्य होते हैं उसी से ही अलंकार काव्य के लिए अनिवार्य है। अर्थात् काव्य की अलंकार के बिनाभभी स्थिति संभव है। साधारण बोलचाल से भिन्न और उच्चकोटि का चमत्कृतिजनक वर्णन को ही वक्रोक्ति कहते हैं।

'वक्रोक्ति: प्रसिद्धाभिधान व्यतिरेकिणी विचित्र्यैवाभिधा वैदग्ध्यं कवि कर्म कौशलं तस्म भंगी विच्छिति तया भणिति:।'

काव्य के उदाहरण के साथ यह दिखाया गया है कि शब्दों के परिवर्तन से किस प्रकार रमणीता लाई जा सकती है। साहित्य में जो साहचर्य है यह वाचक का दूसरे वाचक के साथ व वाक्य के दूसरे वाच्य के साथ होना चाहिए। वक्रता की व्याख्या में कहा गया है कि–

'वक्रत्वं प्रसिद्ध प्रस्थान व्यतिरेकिवैचित्र्यम्।।' (पृ.27, कारिका 1.19)

इसके बाद कविव्यापारवक्रता के छ: भेद बताये हैं यथा–

1. वर्णविन्यासवक्रता।
2. पदपूर्वार्द्धवक्रता
3. प्रत्ययवक्रता
4. वाक्य वक्रता
5. प्रबंध वक्रता
6. वाक्य प्रकरण वक्रता।

कुंतक ने उन भेदों के उदाहरण सहित निरूपण किया है। इनकी स्थापना है कि– 'वक्रोक्ति' काव्य की आत्मा है। जो काव्य में प्राणों का संचार करती है। इसके बिना काव्य की सत्ता ही नहीं हो सकती। परन्तु वक्रोक्ति तब तक नहीं बन सकती जब तक कवि में आवश्यक कल्पना शक्ति नहीं होती।

वैचित्र्य के माधुर्य, प्रसाद, लावण्य और अभिजात्य– ये विशिष्ट गुण होते हैं।

दूसरा उन्मेष वर्ण विन्यास वक्रता की परिभाषा में कहा गया है कि– एको द्वौ बहवोवर्णा: बध्यमाना: पुन: पुन:। वर्णविन्यासवक्रता प्राय: प्राचीन आलंकारिकों द्वारा निरूपित अनुप्रास ही है। यमक भी वर्ण विन्यास वक्रता का ही एक प्रकार है। 'मक' नाम कोप्यस्या: प्रकारं परिदृश्यते।'

ध्वन्यालोक में क्रमश: अर्थान्तर संक्रमित वाच्य तथा अत्यन्ततिरस्कृतवाक्य ध्वनि के उदाहरण है।

कुंतक ने रूपक, प्रशंसा, पर्यायोक्त ब्याजस्तुति उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति तथा अन्य दस से बीस तक अलंकारों के लक्षणों का परीक्षण किया है।

चतुर्थ उन्मेष में प्रकरण वक्रता, और प्रबंध वक्रता का विवेचन किया है। वक्रोक्तिजीवित में ध्वनियाँ व्यंग की काव्य की आत्मा के रूप में स्वतंत्र सत्ता का प्रत्याख्यान किया गया है। और वक्रोक्ति के व्यापक स्वरूप में ही अर्न्तभाव का प्रयत्न किया है। सामान्य पद्धति से भिन्न या उससेभभी उच्च प्रकार की चमत्कारिक वस्तु को वे काव्य की आत्मा मानते हैं। जयरथ ने वक्रोक्ति जीवित का अन्तर्भाव भभक्तिवादी सम्प्रदाय में किया है।

वक्रोक्ति जीवित एक अत्यंत मूल्यवान कृति है। कुन्तक नेभभामह और दण्डी के ग्रन्थ से अधिकांश अवतरण लिये हैं।

भोज और वक्रोक्ति – 'वक्रोक्तिरेव काव्यनां पराभूषेति भामह:।' भोज ने एकादश शृंगार प्रकाश में वक्रोक्ति मत भामह और दण्डी सेभभी अधिक पुराना है। वस्तुत: भामह ने अतिशोक्ति अलंकार (2, 85) के वर्णन में वक्रोक्ति शब्द का प्रयोग अलंकार के पर्याय के रूप में किया है।

भामह ने स्पष्ट रूप में कहा है कि वक्रोक्ति का अर्थ चमत्कार वाचां–

'वक्रार्थ शब्दोक्तिरलंकारा कल्पते। (5.66)

युक्तं वक्र स्वभावोक्त्या सर्वमेवैदिव्यते।' (1,30)

अपने अतिशयोक्ति अलंकार (2–85) के वर्णन में उन्होंने वक्रोक्ति शब्दं का प्रयोग अलंकार के पर्याय के रूप में किया है। अत: भामह के मत से सम्पूर्ण काव्योक्तियों का क्षेत्र वक्रोक्ति का क्षेत्र है । सारा चमत्कारिक और असाधारण कथन इसके अन्तर्गत आता है।

वक्रता काव्य की प्रथम आवश्कता है और ही काव्य अन्य कथनों से पृथक् करती है। भामह ने कहा है कि वक्रोक्ति के अभाव में काव्य नहीं होता वह केवल सादा कथन, भाषण या वार्ता हो सकती है।

भामह की कृति में सामान्य तथा काव्यात्मक उक्ति दोनों भिन्न माने गये हैं। किन्तु कुन्तक स्वभावोक्ति को अलंकार मानने के पक्ष में नहीं है। वे स्वभावोक्ति अलंकार को मानने के विरोधी है।

उक्त सन्दर्भ में दण्डी का विवेचन अधिक स्पष्ट है। दण्डी ने काव्यात्मक कथन को वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति–इन दो भागों में बाँटा है। रसवर्णना के सन्दर्भ में भामह के समान दण्डी ने भी वक्रोक्ति के अन्तर्गत रखा है। भोज ने काव्योक्ति का आगे विवेचन किया है। भोज ने संकेत रूप में दण्डी की बात को ग्रहण किया है। भोज ने प्रेयस् रसवत् और उर्जस्वि इन तीन अलंकारों का वक्रोक्ति के अन्तर्गत वर्णन करते हुए भी दण्डी की दृष्टि रसों और भावों से संबद्ध होने के कारण इनकी प्रकृति पृथक् और विशिष्ट है, तथा प्रभाव महत्तर है।

भोज ने रसवत् अलंकारों को वक्रोक्ति के अन्य भेदों से पृथक् स्वीकार किया है। इस प्रकार भोज अलंकार शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में करते हैं जिस अर्थ में इसका प्रयोग वामन ने अपने सौदर्यलंकार सूत्र (1,1,2) में किया है।

इस प्रकार भोज ने वक्रोक्ति का प्रयोग सामान्य काव्यत्मक वर्णन और रूपकादि अलंकार के रूप में किया है।

भोज ने वक्रोक्ति का विचार भामह और दण्डी से लिया है। यद्यपि भोज ने उपमादिक समस्त अलंकारों को वक्रोक्ति जैसा एक निश्चित नाम दिया है।

भोज ने वक्रोक्ति को उपमादि अलंकारों के गौण अर्थ तक सीमित रखा, सामान्यता व्यापक अर्थ में अलंकार शब्द का प्रयोग किया है।

भोज ने अन्यत्र व्यापक रूप में काव्यात्मक भणिति के लिए वक्रता शब्द का प्रयोग किया है।

इस रूप में उसनेभभामह का समर्थन ही किया है। भोज का दृष्टिकोण कुन्तक से सर्वाधिक मिलता है।

भोज का कहना है कि–

'तात्पर्यमेव वचसि ध्वनिरेव काव्ये।'

भोज अलंकार वक्रता के रूप में जोर देने की बात कहते हैं। भोज रसों को भी अलंकार मानते हैं अत: रस, ध्वनि और हर वस्तु जो सौंदर्य के रूप में स्थापित है वह वक्रता का ही निर्माण करती है।

भोज और कुन्तक में बहुत सी बातें समान है।

वक्रोक्ति में भोज कहता है–

'शब्दार्थो सहितौ वक्रकविवपार शालिनि।

बंधे व्वस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी।।' (वक्रोक्तिजीवित्–1.7)

कुन्तक ने भी प्राचीन अलंकारों को भोज की तरह जीवित किया है। उन्होंने अपनी छ: प्रकार की वक्रोक्ति की समता अलंकार से स्थापित की है। वक्रोक्तिजीवित में अलंकार ही वक्रोक्ति माना है–

'काव्यास्यालंकार: कोऽप्यपूर्वो विधीयते।' (वक्रोक्तिजीवित् 1.2)

'उभावेतावलंकार्यौ तयो पुनरलंकृति:।'

'वक्रोक्तिरेव वैदग्धभीभागतिरुच्यते।।' (वक्रोक्तिजीवित 1.10)

कुन्तक ने गुण को भी अलंकारों में ही शामिल किया है। कुन्तक के मत में वक्रता के अन्तर्गत आने वाली ध्वनि अलंकार है। कुन्तक की दृष्टि में गुण भी अलंकार है। विशिष्ट कथन प्रणाली के वक्रता ही नाम दिया है। भोज और कुन्तक इस बात का साम्य है कि– दोनों प्रबंधालंकार को स्वीकार करते हैं।

भोज का शब्दार्थ विवेचन विशुद्ध व्याकरण की दृष्टि से युक्त है। वक्रोक्ति के सन्दर्भ में काव्य की परिभाषा करते हुए वक्रोक्ति के बारे में कहा है कि–

'यद् वक्रं वच: शास्त्रे लोके च एव तत्।

वक्र यथार्थवादादौ तस्य काव्यमिति स्मृत:।।' (वक्रोक्ति जीवित्)

रुद्रट के पश्चात् वक्रोक्ति शब्द और अर्थ से संबंधित विशिष्ट काव्यालंकार एवं सामान्य अलंकार दोनों का बोधक बन गया।

भोज में इस संकुचित वक्रोक्ति का प्रयोग विशिष्ट काव्यालंकार के अर्थ में भी मिलता है। और सामाान्य व्यापक अलंकार के लिए भी। मम्मट के साथ–साथ भोज ने भी रुद्रट का अनुसरण करते हुए वक्रोक्ति को शब्दालंकार माना है।

वामन ने वक्रोक्ति को अर्थालंकार के रूप माना है। क्योंकि उनकी दृष्टि में समता उपमा तथा वक्रोक्ति में ही निहित है। दण्डी ने इसे समाधि गुण कहा है। जिसमें समता के आधार पर एक अच्छे विशेषणों का उपयोग दूसरे के लिए हो सकता है।

वक्रोक्ति की प्राणभूता लक्षणा के अन्तर्गत सब प्रकार की लक्षणा आती है। वक्रोक्ति का अर्थ है सब प्रकार की काव्योक्तियाँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. भोजकृत शृंगार प्रकाश– म.प्र. हिन्दी अकादमी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. महाभारत–चित्रशाला प्रेस–भण्डार ओरीन्टल तुलनात्मक
4. वामन (संस्करण) (दोषों का वर्गीकरण)
5. रुद्रट (अधिक पद) नामिसाधु
6. आनंदवर्धन (ध्वनलोक) (हेमचंद्र कृत टीका)